सोमनाथ (Somnath)

श्री सोमनाथ मंदिर की गिनती १२ ज्योतिर्लिंगों में सर्वप्रथम ज्योतिर्लिंग के रूप में होती है। गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र के वेरावल बंदरगाह में स्थित इस मंदिर के बारे में कहा जाता है कि इसका निर्माण स्वयं चंद्रदेव ने किया था। इसका उल्लेख ऋग्वेद में भी मिलता है। सोमनाथ मंदिर विश्व प्रसिध्द धार्मिक व पर्यटन स्थल है। मंदिर प्रांगण में रात साढे सात से साढे आठ बजे तक एक घंटे का साउंड एंड लाइट शो चलता है, जिसमें सोमनाथ मंदिर के इतिहास का बडा ही सुंदर सचित्र वर्णन किया जाता है।

शिव भगवानुवाच

"मैं सर्व आत्माओं को ज्ञान का सोमरस प्रदान करता हूँ।"

मल्लिकार्जुन (Mallikarjuna)

आन्ध्रप्रदेश प्रांत के कृष्णा जिले में कृष्णा नदी के तटपर श्रीशैल पर्वत पर श्री मल्लिकार्जुन विराजमान है। इसे दक्षिण का कैलाश कहते है। श्रीशैलम (श्री सैलम नाम से भी जाना जाता है) नामक ज्योतिर्लिंग आंध्रप्रदेश के पश्चिमी भाग में कुर्नूल जिले क नल्लामल्ला जंगलों के मध्य श्री सैलम पहाडी पर स्थित है। यहां शिव की आराधना मल्लिकार्जुन नाम से की जाती है। मंदिर का गर्भगृह बहुत छोटा है और एक समय में अधिक लोग नहीं जा सकते। शिवपुराण के अनुसार भगवान कार्तिकेय को मनाने में असमर्थ रहने पर भगवान शिव पार्वती समेत यहां विराजमान हुए थे।

शिव भगवानुवाच

"मैं पवित्र गृहस्थ आश्रम की स्थापना करता हूँ।"

ओंकारेश्वर (Omkareshwar)

मालवा क्षेत्र में श्री ओंकारेश्वर स्थान नर्मदा नदी के बीच स्थित द्वीप पर है। श्री ओंकारेश्वर लिंग को स्वयंभू समझा जाता है।

देश के १२ ज्योतिर्लिंगों में से एक ओंकारेश्वर तीर्थ अलौकिक है। यह तीर्थ नर्मदा नदी के किनारे विद्यमान है। नर्मदा नदी के दो धाराओं के बंटने से एक टापू का निर्माण हुआ था जिसका नाम मान्धाता पर्वत पडा। आज इसे शिवपुरी भी कहा जाता है। इसी पर्वत पर भगवान ओंकारेश्वर और परमेश्वर विराजमान है। ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग के निकट ही एक परमेश्वर है। (जिसे लोग अमलेश्वर ज्योतिर्लिंग भी कहते है) इन दोनों ज्योतिर्लिंगों की गिनती एक ही ज्योतिर्लिंग के रुप में की जाती है।

शिव भगवानुवाच

"मैं 'ओम' का सत्य परिचय देता हूँ।"

महाकालेश्वर (Mahakaleshwar)

श्री महाकालेश्वर (मध्यप्रदेश) के मालवा क्षेत्र में क्षिप्रा नदी के तटपर पवित्र उज्जैन नगर में विराजमान है। उज्जैन को प्राचीनकाल में अवंतिकापुरी कहते थे। उज्जैन में शिप्रा नदी के निकट स्थित महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग देश के १२ ज्योतिर्लिंगों में सबसे प्रसिध्द है। पौराणिक मान्यता के अनुसार सच्चे मन से स्वयंभू भगवान महाकालेश्वर की पूजा-अर्चना करनेवाले मनुष्य का काल भी कुछ नहीं बिगाड पाते।

शिव भगवानुवाच

"मैं सर्व बुराइयों का नाश करता हूँ।"

केदारनाथ (Kedarnath)

श्री केदारनाथ हिमालय के केदार नामक श्रृंग स्थान पर स्थित है। शिखर के पूर्व की ओर अलकनन्दा के तट पर श्री बद्रीनाथ अवस्थित है और पश्चिम में मन्दाकिनी के किनारे श्री केदारनाथ है। यह स्थान हरिद्वार से १५० मील और ऋषिकेश से १३२ मील दूर उत्तरांचल राज्य में है।

पवित्र ज्योतिर्लिंग केदारनाथ भगवान शिव के साधना स्थल हिमाचल पर्वत के केदार नामक श्रृंग पर स्थित है। उत्तराखंड में हिमालय पर्वत की गोद में केदारनाथ मंदिर बारह ज्योतिर्लिंग में सम्मिलित होने के साथ-साथ चार धाम में से भी एक है। यहां की प्रतिकूल जलवायू के कारण यह मंदिर अप्रैल से नवंबर माह के मध्य ही दर्शन के लिए खुलता है। कहते है इसका निर्माण पांडव वंशी जनमेजय ने कराया था, जबकि आदि शंकराचार्य ने इस मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया था।

शिव भगवानुवाच

"मैं सर्वोच्च देवी देवता पद प्रदान करता हूँ।"

भीमाशंकर (Bhimashankar)

भीमाशंकर मंदिर भोरगिरी गांव खेड से ५० कि.मी. उत्तर–पश्चिम पुणे से ११० कि.मी. में स्थित है। ३,२५० फीट की उंचाई पर स्थित यह मंदिर का शिवलिंग काफी मोटा है। इसलिए इसे मोटेश्वर महादेव के नाम से भी जाना जाता है। यह पश्चिमी घाट के सह्याद्रि पर्वत पर स्थित है। यही से भीमा नदी भी निकलती है। यह दक्षिण पश्चिम दिशा में बहती हुई रायचूर जिले में कृष्णा नदी से जा मिलती है। यहां भगवान शिव का प्रसिध्द ज्योतिर्लिंग है।

शिव भगवानुवाच

"मैं आसुरी संस्कारों का संहार हूँ।"

काशी विश्वनाथ (Kashi Vishwanath)

वाराणसी (उत्तर प्रदेश) स्थित काशी के श्री विश्वनाथजी सबसे प्रमुख ज्योतिर्लिंगों में एक है। गंगा तट स्थित काशी विश्वनाथ शिवलिंग दर्शन हिंदुओं के लिए सबसे पवित्र है।

श्री काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग वाराणसी जनपद के काशी नगर में अवस्थित है। कहते है काशी तीनों लोकों में न्यारी नगरी है, जो भोले बाबा के त्रिशूल पर विराजती है। इस मंदिर को कई बार बनाया गया, नवीनतम संरचना जो यहां दिखाई देती है वह १८ वीं शताब्दी में बनी थी। कहा जाता है कि एक बार इंदौर की रानी अहिल्याबाई होळकर के स्वप्न में भगवान शिव आए। वे भगवान शिव की भक्त थी। इसलिए उन्होंने १७७७ में यह मंदिर निर्मित कराया।

शिव भगवानुवाच

"मैं नए विश्व का रचयिता हूँ।"

त्र्यंबकेश्वर (Trimbakeshwar)

श्री त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग महाराष्ट्र प्रांत के नासिक जिले में पंचवटी से १८ मील की दूरी पर ब्रह्मगिरी के निकट गोदावरी के किनारे है। इस स्थान पर पवित्र गोदावरी नदी का उद्‌गम भी है।

गोदावरी के उद्‌गम स्थल के समीप ही श्री त्र्यंबकेश्वर शिव अवस्थित है। गौतमी तट पर स्थित इस त्र्यंबक ज्योतिर्लिंग का जो मनुष्य भक्तिभाव पूर्वक दर्शन पूजन करता है, वह समस्त पापों से मुक्त हो जाता है।

शिव भगवानुवाच

"मैं त्रिमूर्ति (त्रिदेवों) ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का रचयिता हूँ।"

नागेश्वर (Nageshwar)

श्री नागेश्वर ज्योतिर्लिंग बडौदा क्षेत्रांतर्गत गोमती द्वारका से ईशानकोण में बारह-तेरह मील की दूरी पर है। निजाम हैदराबाद राज्य के अन्तर्गत औढा ग्राम में स्थित शिवलिंग को ही कोई-कोई नागेश्वर ज्योतिर्लिंग मानते है। कुछ लोगों के मत से अल्मोडा से १७ मील उत्तर-पूर्व में यागेश (नागेश्वर) शिवलिंग ही नागेश ज्योतिर्लिंग है।

भोलेनाथ के निर्देशानुसार ही शिवलिंग का नाम नागेश्वर ज्योतिर्लिंग पडा। नागेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने के बाद जो मनुष्य उसकी उत्पत्ति और माहात्म्य सम्बन्धी कथा सुनता है। वह भी समस्त पापों से मुक्त हो जाता है तथा सम्पूर्ण भौतिक और आध्यात्मिक सुखों को प्राप्त करता है।

शिव भगवानुवाच

"मैं सर्व विकारों रुपी विष का नाश करता हूँ।"

रामेश्वर (Rameshwaram)

श्री रामेश्वर तीर्थ तमिलनाडू प्रांत के रामनाड जिले में है। यहाँ लंका विजय के पश्चात भगवान श्रीराम ने अपने अराध्यदेव शिव की पूजा की थी। ज्योतिर्लिंग को श्री रामेलिंगेश्वर के नाम से भी जाना जाता है।

रामेश्वर ज्योतिर्लिंग दक्षिण भारत के समुद्र तट पर स्थित है। कहते है मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम ने स्वयं अपने हाथों से श्री रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग की स्थापना की थी।

रामेश्वरम की कथा शिव पुराण के अनुसार जब श्रीराम ने रावण के वध हेतु लंका पर चढाई की थी तो विजयश्री की प्राप्ति हेतु उन्होंने समुद्र के किनारे शिवलिंग बनाकर उनकी पूजा की थी। तब भगवान शिवने प्रसन्न होकर श्रीराम को विजयश्री का आशीर्वाद दिया था। श्रीराम द्वारा प्रार्थना किए जाने पर लोककल्याण की भावना से ज्योतिर्लिंग के रूप में सदा के लिए वहां निवास करना भगवान शिवने स्वीकार कर लिया। एक अन्य मान्यता के अनुसार रामेश्वरम में विधिपूर्वक भगवान शिव की आराधना करने से मनुष्य ब्रह्महत्या जैसे पाप से भी मुक्त हो जाते है।

शिव भगवानुवाच

"मैं श्रीराम सहित सर्व देवी देवताओं का परमपिता हूँ।"

घृष्णेश्वर (Grishneshwar)

श्री घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग को घुसृणेश्वर या घृष्णेश्वर भी कहते है। इनका स्थान महाराष्ट्र प्रांत में दौलताबाद स्टेशन से १२ मील दूर बेरूलगांव के पास है।

बौद्ध भिक्षुओं द्वारा निर्मित एलोरा की प्रसिध्द गुफाएं इस मंदिर के समीप ही स्थित है। इस मंदिर का निर्माण देवी अहिल्याबाई होलकर ने करवाया था। द्वादश ज्योतिर्लिंग में इसे अंतिम ज्योतिर्लिंग कहते है। घृष्णेश्वर महादेव के दर्शन करने से सभी प्रकार के पाप नष्ट हो जाते है तथा उसी प्रकार सुख-समृद्धि होती है, जिस प्रकार शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा की।

सति शिवभक्त घुश्मा के आराध्य होने के कारण वे यहां घृष्णेश्वर महादेव के नाम से विख्यात हुए। कहते है घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग का दर्शन लोक-परलोक दोनों के लिए अमोघ फलदायी है।

शिव भगवानुवाच

"मैं निर्बल आत्माओं को प्राणदान देता हूँ।"

वैद्यनाथ (Vaidyanath)

शिवपुराण में ''वैद्यनाथ चिताभूमौं'' ऐसा पाठ है, इसके अनुसार (झारखंड) राज्य के संथाल परगना क्षेत्र में जसीडीह स्टेशन के पास देवघर (वैद्यनाथधाम) नामक स्थान पर श्री वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग सिध्द होता है, क्योंकि यही चिताभूमि है। परंपरा और पौराणिक कथाओं से देवघर स्थित श्री वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग को ही प्रमाणिक मान्यता है।

एक धार्मिक मान्यता है कि परली ग्राम के निकट स्थित वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग वास्तविक ज्योतिर्लिंग है। परलीग्राम निजाम हैदराबाद क्षेत्र के अंतर्गत पडता है। यहां का मंदिर अत्यंत पुराना है, जिसका जीर्णोध्दार रानी अहिल्याबाई ने कराया था, लेकिन शिव पुराण के अनुसार झारखण्ड प्रान्त के जसीडीह के समीप देवघर का श्री वैद्यनाथ शिवलिंग ही वास्तविक वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग है।

शिव भगवानुवाच

"मैं तुम्हें सदा स्वस्थ (आरोग्य) बनाता हूँ।"